NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2011

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours 70 marks

These marking guidelines were used as the basis for the official IEB marking session. They were prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom were required to attend a rigorous standardisation meeting to ensure that the guidelines were consistently and fairly interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

At standardisation meetings, decisions are taken regarding the allocation of marks in the interests of fairness to all candidates in the context of an entirely summative assessment.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines, and different interpretations of the application thereof. Hence, the specific mark allocations have been omitted.

IEB Copyright © 2011

भाग क

प्रश्न १

१. निम्नलिखित तीन कविताओं में से किन्हीं **एक** पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए । ३५

१.१ कविता ः *कर्मवीर ।* २२

१.१.१ *कवि के अनुसार "कर्मवीर" का अर्थ क्या है* ४
जो अपने काम में उत्साह से लग जाते है । काम में व्यस्त है ।

१.१.२ *कविता का केन्द्रीय विचार पर लिखो* ? ६
खवि कहता है कि एक कर्मवीर जो अपने काम में लग जाते वह मुसीबतों से नहीं घबराता है । यदि समुद्र तूफान भी उठने लगे वह अपने साहस से उस सागर का पानी पीजाने की शक्ति रखता है ।

१.१.३ "कार्य पथ" का अर्थ क्या है । ४
कार्य पथ का बाधक उसके काम में बाधे आए । वह घबराता नहीं हैं । वीरता से आगे बढ़ता है । सामने यदि पर्वत जैसा भी आवे तो वह वज्र बनकर पर्वत को धुल में बदल देते हैं ।

१.१.४ सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए ः

(क) *"चीटियों सदृश मसलता है"* ४
एक वीर पुरूष जब किसी कठिन काम को अपने हाथों में लेता है वह जबतक उसे खतम नहीं करता है वह पीछे नहीं हटता है । हम अपने पैरों के चीटियों को मसला देते हैं ।

(ख) *"बुद्धि के बल से वश में रह ।"* ४
कवि कहता है कि कर्म मनुष्य के बुद्धि के वश में है और अनेक प्रकार के कर्म होते है । बिजली एक तरफ तूफानी रूप में चमकती है और फिर ठंडक लाने के लिए वर्षा लाती है ।

IEB Copyright © 2011

१.२ कविता ः सत्ता १३

१.२.१ "सत्ता" यह शीर्षक कवि ने क्यों प्रयोग किया है ? ३

इस कविता में कवि सत्ता की दुरी प्रभाव के बारे में चर्चा करते हैं ।लाशों क`देर पर चढ़ कर जो सत्ता के सिंहासन पर पहुँचना चाहते है । हमे बताते है कि राजनीति एक ऐसा खेल है जिस में जीतने के लिए लोग कुछ भी कर सकते है ।

१.२.२ अपने शब्दों में सझाइए
"पॉच हजार साल की संस्कृति, गर्व करें या रोएँ । ५

वे कहते हैं कि हमारी सब से पुरानी संस्कृति और धर्म है ।हमने अपने धर्म से क्या सीखा । अपने धर्म पर गर्व करना चाहिए । अगर हम ने कुछ नहीं सीखा तो यह रोने की बात बन गयी ।

१.२.३ "अथर्ववेद का यह मंत्र ।" इस पंक्ति कवि ने क्यों प्रयोग किया है । विस्तार पूवर्क समझाइए ५

इस धरती हम सब की मॉ है । और हम इन्की संतान । इस नाते से हम सब भाई भाई है । तो तुम कैसे अधामिर्क काम करते हो कि अपने भाइयों पर चोट पहुचाते हो ।क्या तुम इस मंत्र को मानते है सिर्फ जपते हो ।

(३५)

अथवा

१.३ कविता ः लक्षमण परशुराम सम्वाद

१.३.१ अपने शव्दों में सझाइए ।

१.३.१.१ नृप वालक काल बस बोलत तोहि न सँभार ।
धनुही सम तिपुरारी धनु बिदित सकल संसार ।। ५

१.३.१.१ मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर ।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ।। ५

१.३.२ "लखन कहा हँसि हमरें जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना" - लक्षमण परशुराम सम्वाद को अपने शब्दों में हिन्दी में समझाइए । २५

(३५)

{३५}

भाग ख

प्रश्न दो

२. **निम्नलिखित तीन कहानियों में से किन्हीं <u>एक</u> के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।**

२.१ कहानी : अर्गल की वीर रानी

२.१.१ गौतम कौन था ? २ **अर्गल के राजा**

२.१.२ राजा क्यों कर देने से इनकार कर दिया ? ४ **अपने को आजाद समझ कर कर देने से इन्कार कर दिया ।**

२.१.३ लड़ाई का वर्णन कीजिए ? ६
लड़ाई के बाजे बजने लगे और उसकी सेना के राजपूत सिपाही सिंह की तरह गजर्त हुए मुसमानी सेना पर टुट पड़े । सूबेदार को बड़ा अचम्भा हुआ क्योंकि वह इस घमंड में फूला हुआ था कि हमारी इतनी बडी सेना के सामने राजा कभी नहीं आ सकेगा ।दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ । दोनों ओर से हज़ारों सिपाही मारे गए । अन्त में राजपूतों को मार से मुसमान घबरा गए और वे मैदान छोड़ भाग निकला ।

२.१.४ चन्द्रग्रहण पर रानी क्या करनी चाहती थीं ? ४
रात को रानी ने अपनी सखियों से कहा कि मैं गंगा स्नान करने जाऊँगी ।

२.१.५ *"तुम पुरुष हो , तुम में पुरुषों का गुण होना चाहिए"* - किसने कहा और क्यों?६
रानी घबरा कर बोली । मुसलमानो ने उसे घेर लिया ।

२.१.६ अभयचन्द ने रानी पर क्या उपकार किया था । ५
निर्भयचन्द और अभयचन्द सारी भीड़ को अपना तलवारों से चीरते हुए रानी के पास पहुच गए । उन्होंने रानी और उसकी सखियों को अपने बीच में कर लिया ।केवल अभयचन्द ही बच रहा । अभयचन्द रानी को बचा लिया ।

२.१.७ राजा ने अभयचन्द के साथ क्या किया । ४

२.१.६ इस कहानी सें हम क्या सन्देस मिलते है ? ४

(३५)

अथवा

२.२ कहानी ः सती ः चिंतादेवी के चरित्र का चरित्र चित्रण करते हुए सती कहानी अपने शब्दों में वर्णन कीजिए । **See attached notes**

(३५)

अथवा

२.३ निम्नलिखित नाटक ः मेल मिलाप पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए

२.३.१ निम्ननलिखित पात्रों में से किन्हीं **एक** का चरित्र-चित्रण कीजिए । १0

२.३.१.१ किशन सिंह
२.३.१.२ मंगल सिंह

See attached notes

२.३.२ जीवन में भूल सभीसे होती है यदि घरके लोगों में ही मेल मिलाप न रह जानकिी भूल हो जाए और समय रहते समझकर भुल सुधार ली जाए तो परिस्थिति कैसे सम्हल जाती है । इसका विवेचन इस नाटक में किया है । विस्तार पूर्वक समझाइए । २५ **See attached notes**

(३५)
{३५}

[७0]

Total: 70 marks

मेल मिलाप (एकांकी)

प्रश्नोत्तर :-

प्रश्न 1 - एकांकी 'मेल मिलाप" के नाम की सार्थकता बताइए। —

उत्तर :- मेल मिलाप का नाम एकांकीकार ने उचित ही रखा है। इस एकांकी में बताया गया है कि किशन और मंगल चचेरे भाई हैं। आपसी मन-मुटाव के कारण दोनों में बोलचाल नहीं। किशन की बेटी लक्ष्मी की शादी पर मंगलसिंह शामिल नहीं होता है और न ही अपनी पत्नी राधा को शादी में जाने देता है। मंगलसिंह गाँव के लोगों रघुराज और दिद्दा से मिल कर शहर में लकड़ी का कारखाना खोलता है। धोखा देकर उसके दोस्त उस कारखाने में आग लगा देते हैं, अब उसके पास भी रुपये नहीं हैं। लड़की सीता की शादी २ दिन तक होने वाली है और शादी की कुछ भी तैयारी नहीं है। ऐसे मुसीबत के समय में मंगल का चचेरा भाई किशन सिंह उसकी मदद के लिए आता है और उसे दिलासा देते हुए सीता की शादी स्वयं करने को कहता और राधा और चन्दो को भी शादी के लिए सामान खरीदने के लिए शहर चलने को कहता है।

उसमें बताया है कि किस प्रकार दोनों भाईयों में पहले बनती नहीं थी और किस प्रकार दोनों में मेल हो गया। इसलिए एकांकीकार ने इसका नाम "मेल मिलाप" ठीक ही रखा है। मेल-मिलाप ऐसा है इसमें अपने-पराए और घर के लोग निकट आ जाते हैं। इसलिए इस एकांकी का नाम सार्थक है। और एकांकीकार ने भी कहा कि मेलमिलाप में, सहयोग से परिवार, गाँव और प्रांत, तथा देश की समृद्धि छिपी है।

IEB Copyright © 2011

प्रश्न:- मेल मिलाप एकांकी के आधार पर राधा का चरित्र चित्रण कीजिए।-

उत्तर:- राधा इस एकांकी की मुख्य पात्र है। एक अच्छी और समझदार औरत में जो भी गुण होने चाहिए। वे सब उसमें विद्यमान हैं।

व्यवहार कुशल:- वह अपने पति को भाई की लड़की की शादी में जाने के लिए समझाती है।

कर्तव्य:- वह अपने कर्तव्य से पीछे हटने वाली नहीं है। अपने सगे भाई के बीमार होते हुए भी वह अपने देवर की लड़की की शादी को [illegible] रखती है, वह बहुत दूरदर्शी है उसे पता है कि रघुनाथसिंह अच्छा आदमी नहीं है। वह अपने पति को उससे पहले ही चौकन्ना करती है। वह बहुत ही सुलझी हुई औरत। मिल-जुल कर रहनेवाली औरत है, पति के न चाहते हुए भी वह अपने देवर किशनसिंह और उसकी पत्नी के साथ मिल-जुल कर रहती है उसे पता है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसके लिए समाज में रहना किस प्रकार जरूरी है। मधुरभाषी है। इसलिए अंत में हम कह सकते हैं कि इस एकांकी की सबसे प्रभावशाली पात्र, राधा ही है, उसमें एक अच्छी औरत के सभी गुण विद्यमान हैं। और नारी के रूप में वह इस एकांकी में प्रथम स्थान रखती है, मुख्य पात्र है। वह बहुत ही बुद्धिमती औरत है।

प्रश्न२. मेल मिलाप एकांकी में किशनसिंह के चरित्र का वर्णन कीजिए। –

उत्तर:- मेल मिलाप एकांकी में किशनसिंह भी एक प्रभावित पात्र है। वह भी एक बहुत सज्जन, समझदार, मधुरभाषी दूरदर्शी व्यक्ति है। सब का आदर करने वाला और सभी गाँव वालों के साथ प्रेम से रहने वाला व्यक्ति है। गाँव का भला सोचने वाला है, वह अपनी भाभी को भी कहता है कि अगर हम-

"सब आगे बढ़ते चलो गए तो एक दिन गाँव स्वर्ग बन जाएगा।"
वह सभी से मिल-जुल कर रहने वाला है तभी वह सबको भी
कहता है कि "एक दूसरे के सहयोग से जिन्दगी है।
उसका गाँव में सम्मान है। यहाँ तक कि रघुराजसिंह
जैसे धूर्त मक्कार लोग भी उससे डरते, बात करने
से कतराते हैं। वह एक सुलझा व्यक्ति है। इस
एकांकी में जो भी उसके वाक्य कहे हैं, वह सभी प्रभावित
करने वाले हैं।

अंत में हम कह सकते हैं कि, गाँव का सच्चा
हितैषी, अच्छा पति, अच्छा भाई, अच्छा देवर, अच्छा ग्रामीण
और अच्छा मददगार है। वह अपनी भाई की इज्जत
करता है और मंगलसिंह को मुसीबत में पड़ा देखकर
उसका मन पसीज जाता है और अपने भाई के कर्तव्य
से मंगलसिंह की मदद करने को तैयार हो जाता है और
अपनी भतीजी की शादी (सविता) स्वयं करने के
लिए तैयार है। इस एकांकी में उसने सहयोग पर बार बार
जोर दिया है, इसमें भी वह मंगलसिंह को कहता है कि
"सहयोग के बिना जिन्दगी" कैसे चल सकती है।

प्र.-3. मंगलसिंह का चरित्र चित्रण अपने शब्दों में लिखिए।-

उत्तर- मंगलसिंह गाँव का एक खाता पीता किसान है। वह
पैसा होने के कारण अकड़ वाला घमंडी है। वह पत्नी
के समझाने पर भी भाई की बेटी (लक्ष्मी) की शादी में नहीं
जाता है वह दूसरों के पीछे चलने वाला है। रघुराज
सिंह जैसे धूर्त भी उसे अपने पीछे लगा लेते हैं।
वह दूरदर्शी मिलनसार नहीं है। इस एकांकी में उसका
चरित्र एक साधारण सा है। वह बहुत जिद्दी है पत्नी
के और किशन के बुलाने पर भी लक्ष्मी की शादी
में नहीं जाता है। उसे अच्छा या बुरा समझने की
पहचान नहीं है वह अधिक बुद्धिमान नहीं है
उसके दोस्त भी अच्छे नहीं हैं। धूर्त है रघुराज

सिंह जैसे जो अंत में उसे धोखा देते हैं। अंत में कह सकते हैं उसका चरित्र साधारण है वह किसी को भी प्रभावित नहीं करता है।

पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिए :–

1. "इसी प्रकार हम आगे बढ़ते चले गए तो एक दिन गाँव स्वर्ग बन जाएगा।"

यह वाक्य किशनसिंह ने राधा (अपनी भाभी) को कहा है जब वह उसके घर लड़की को शगुन देने जाती है। किशन गाँव का हितैषी है इसलिए उसने कहा कि हम तरक्की करते आगे बढ़ेंगे तो गाँव बहुत सुन्दर बन जाएगा।

2. "कि लोग आँखें होते हुए भी उन्हें मूँद कर चलाते हैं।"
इस पंक्ति को किसने किसके बारे में कहा है।

यह पंक्ति किशन ने अपनी भाभी को (राधा) कही कि मंगल सिंह को रघुराज सिंह जैसे धूर्त लोगों से सावधान रहना चाहिए। वह मंगलसिंह को कह रहा कि लोग समझ होते हुए ना समझ क्यों बन जाते अर्थात रघुराजसिंह जैसे इनसान को मंगलसिंह अपना दोस्त क्यों बना रहा है।

3. "तुम गाँव के नाम पर बट्टा लगाते हो"

यह वाक्य किशन सिंह ने कहा है जब रघुराज सिंह और हीरा पंडित में कहासुनी हो जाती है। वह रघुराज सिंह को कहता है कि तुम गाँव वालों के लिए एक कलंक और सभी गाँव वालों का नाम खराब कर रहे हो और इसलिए तुम गाँव छोड़ कर चले जाओ।

4. मुसीबत के वक्त पर अगर आदमी आदमी का साथ न दें।

मंगल सिंह के कारखाने में आग लगने से मंगलसिंह बेचैन है उस समय किशन ने उसे दिलासा देते हुए यह वाक्य कहा कि मुसीबत में ही मनुष्य, मनुष्य की मदद करता है।